2

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा नेशनल करिकुलम फ़्रॉर टीचर एजुकेशन (एन.सी.एफ़.टी.ई.) के विशेष संदर्भ में

*पतंजलि मिश्र**
*भूपेन्द्र सिंह***

'प्रशिक्षण' किसी व्यक्ति के ज्ञान, कुशलताओं, क्षमताओं एवं अभिरुचि में वृद्धि को कहते हैं। प्राथमिक शिक्षक विद्यार्थी को गणित विषय से लेकर भाषा एवं बहुत-सी जीवन कलाओं को सीखने में मदद करता है। माता-पिता के बाद बालक सीधे प्राथमिक शिक्षक के सानिध्य में ज्ञान एवं कौशल ग्रहण करता है। घर से निकलने के बाद बालक बाहरी वातावरण के संपर्क में आकर अच्छी एवं बुरी सभी बातें सीखता है, लेकिन प्रारंभ से नियंत्रित वातावरण द्वारा दायित्वपूर्ण मार्गदर्शन देकर एक शिक्षक उसे बुरी बातों अथवा व्यवहारों से दूर रखता है। प्राथमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, क्योंकि वही है जो उसे अपने ज्ञान रूपी अस्थिमज्जा से रक्त रूपी शिक्षा प्रदान करता है, जो जीवन भर उसकी और राष्ट्र की रगों में दौड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में कहा गया है कि कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो जाए, लेकिन स्तर में वह शिक्षक से बड़ा नहीं हो सकता। सर्वविदित है कि एक बालक को माता-पिता के अतिरिक्त शिक्षित करने का कार्य शिक्षक करता है, लेकिन एक शिक्षक के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था पर अभी तक एक गहरा प्रश्न चिह्न बना हुआ है।

प्राथमिक शिक्षक–शिक्षा का इतिहास

पुरातन परिदृश्य

2500 ईसा पूर्व वैदिक काल में जब वेदों का प्रशिक्षण दिया जाता था और शिक्षक के रूप में ब्राह्मण वर्ग शिक्षा के प्रति समर्पित था, उस समय कभी-कभी गुरु अपने सबसे योग्य शिष्य अथवा अपने पुत्र को शिक्षण का कार्य सौंप दिया करते थे। संभवत: यहीं से शिक्षक शिक्षा का प्रारंभ हुआ माना जा सकता है। बौद्ध काल में पबज्जा/प्रवज्या संस्कार से चैत्य और विहार में प्रवेश के साथ शिक्षा आरंभ होती थी। जहाँ निगमन विधि (Deductive Method) द्वारा बुद्धि (Intellect) को प्रखर बनाने पर ज़ोर था, जो जितना बौद्धिक नियंत्रण बनाने में सफ़ल रहता, वही शिक्षक

* *सहायक प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324010
** *शोध छात्र*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324010

के रूप में स्थापित होता था। मुस्लिम काल में मकतबों (Schools) में मौलवियों द्वारा क़ुरान और उसमें दी गई विषय-वस्तु का अध्ययन करने पर ज़ोर दिया जाता था। योग्य और अनुभवी मुरीद/शिष्य (*Pupil*) को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता था।

समकालीन परिदृश्य

आधुनिक युग में प्राथमिक शिक्षक शिक्षा की उत्पत्ति सन् 1802 में ब्रिटिश काल से मानी जाती है, जब विलियम केरे (William Carey) ने सेराम्पोर में प्राथमिक शिक्षकों के लिए एक नॉर्मल स्कूल (Normal School) स्थापित किया। यह नॉर्मल स्कूल प्राचीन मोनिटोरिअल पद्धति का ही प्रतिरूप था जो कि पारस्परिक निर्देशों पर आधारित था। सन् 1819 में कलकत्ता स्कूल सोसायटी (Calcutta School Society) की स्थापना हुई, जिसका पहला कदम इंग्लैंड की *बेल लंकेस्टेरियन पद्धति* (Bell Lanchesterian System) से शिक्षकों को प्रशिक्षण देना था। सन् 1829 में बॉम्बे की *"द नेटिव एजुकेशन सोसायटी* (The Native Education Society)" और इसी समय *"द एलफ़िन्स्टन इंस्टीट्यूशन* (The Elphinstone Institution)" ने प्राथमिक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कक्षाएँ प्रारंभ कीं। ये संगठन और संस्थान प्रारंभिक रूप में प्राथमिक शिक्षकों के लिए ही बने थे। इसी समय सन् 1854 में लंदन से ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जारी 'वुड' के घोषणा पत्र (Wood's Despatch) जिसे भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है, में सरकार द्वारा स्थापित नए स्कूलों और नए पाठ्यक्रमों हेतु शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए ज़ोर दिया गया। सन् 1856 में "पब्लिक इंस्ट्रक्शन (Public Instruction)" के निदेशक मि. होवार्ड (Mr. Howard) ने मुंबई में अंग्रेज़ी विद्यालयों के सहायक शिक्षकों के औपचारिक प्रशिक्षण हेतु नियमित प्रशिक्षण महाविद्यालयों का सुझाव दिया। परिणामस्वरूप सन् 1856 में मद्रास के सैदापेट में स्थापित "द गवर्मेंट नॉर्मल स्कूल (The Government Normal School)" को नियमित प्रशिक्षण महाविद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। सन् 1881 में लाहौर ट्रेनिंग कॉलेज खोला गया। सन् 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हंटर आयोग), सन् 1904 में गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया रेज़ोल्यूशन (Government of India Resolution), सन् 1917-19 में कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सेडलर आयोग), सन् 1948-49 में विश्वविद्यालय आयोग (राधाकृष्णन आयोग), राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 और विभिन्न प्रकार की नीतियों ने प्राथमिक शिक्षक शिक्षा हेतु पृथक-पृथक सुझाव दिए। वर्तमान में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (National Council for Teacher Education) के द्वारा समय-समय पर विभिन्न नीतियाँ बनाई गई हैं। इन्हीं नीतियों के संदर्भ में एन.सी.एफ़.टी.ई. (NCFTE) का निर्माण किया गया है जो कि प्राथमिक शिक्षक शिक्षा के लिए भी आवश्यक दिशा-निर्देशों का दस्तावेज़ है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 10 5/26/2017 9:26:52 AM

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा की ओर दो कदम और डाइट की स्थापना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक शिक्षा की ज़िम्मेदारी दी गई। केवल ये ही वे संस्थान थे जिन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के लिए बैचलर ऑफ़ एलीमेंट्री एजुकेशन (Bachelor of Elementry Education) पाठ्यक्रम प्रारंभ किया। इसी क्रम में ज़िला स्तर पर डाइट की स्थापना की गई। ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षकों को प्रशिक्षण देना था। इसके लिए स्थानीय और ज़मीनी स्तर पर विभिन्न रणनीतियाँ बनाना और पाठ्यक्रम में स्थानीय भूगोल, परंपराएँ, लोकगीत, किंवदंतियाँ, दंतकथाएँ, स्थानीय जंगल, मेले, स्थानीय जनसंख्या, सांस्कृतिक प्रदर्शनी, त्योहार, खेती, उद्योग, उद्यम, हस्तशिल्प, समुदाय, जनजातियाँ इत्यादि आस-पास के वातावरण एवं परिस्थितियों के ज्ञान से संबंधित विषय-वस्तु शामिल कर पाठ्यवस्तु बनानी थी। नियमित और संपूरक (Cumulative) मूल्यांकन हेतु दिशा-निर्देश और तकनीकी का विकास करना था और साथ-ही-साथ अवलोकन, निदान, प्रतिभा-पहचान हेतु परीक्षण, प्रश्न-पत्र निर्माण, कार्यशालाओं का आयोजन भी अपेक्षित था। यशपाल समिति (1993) ने अपनी रिपोर्ट (Learning Without Burden, 1993) में संकेत किया कि शिक्षकों को तैयार करने के लिए अपर्याप्त कार्यक्रमों की वजह से विद्यालयों में सीखने की गुणवत्ता कम हो रही है जो अपने आप में शिक्षक-प्रशिक्षक की बेहद खराब स्थिति की तरफ़ संकेत करता है।

दूरस्थ शिक्षा में प्राथमिक शिक्षक हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा स्थापित दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में पहले से ही कार्यरत प्राथमिक शिक्षकों के लिए दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण कार्यक्रम, टेली-कॉन्फ्रेंसिंग आदि द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। यह ऐसी व्यवस्था है जिसमें शिक्षक स्वयं सीख कर अन्य को भी प्रशिक्षित कर सकता है।

एन. सी. एफ. टी. ई. एवं प्राथमिक शिक्षा

एक लंबा समय बीत जाने के बाद भी प्राथमिक शिक्षा का स्तर बुनियादी मुकाम भी हासिल नहीं कर पाया है। प्राथमिक शिक्षा में शिक्षक का विशेष महत्व है। शिक्षा और शिक्षक हमेशा से चर्चा का विषय रहा है, इसमें भी प्राथमिक शिक्षक तो सर्वदा केंद्र में रहता है। अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में तो पूर्णकालिक प्रधानाध्यापक ही नहीं रहते। प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा के लिए किसे दोष दें और किसे नहीं, परंतु विभिन्न प्रकार की नीतियों ने भी कुछ नया परिवर्तन लाने का कार्य नहीं किया है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (Right to Education Regulation)1 अप्रैल 2010 को लागू होने से लेकर आज तक प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन की स्थिति कुछ खास वृद्धि करती नहीं दिखाई देती है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 11 5/26/2017 9:26:52 AM

इसी क्रम में शिक्षक-शिक्षा की दशा को सुधारने एवं बेहतर बनाने के लिए सन् 2009-10 में एन.सी.एफ़. टी.ई. (National Curriculum Framework for Teacher Education) का निर्माण मोहम्मद अख़्तर सिद्दीक़ी की अध्यक्षता में किया गया।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता

सन् 1976 से पहले शिक्षा राज्य सूची का विषय था लेकिन 44वें संशोधन द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया, जिसके दूरगामी परिणामों के हम साक्षी हैं। भारतीय संविधान में सन् 2002 में 86वाँ संशोधन कर सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के द्वारा निश्चित समय में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु 6-14 वर्ष तक के बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई। बाद में शिक्षा के अधिकार (Right to Education) को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई। सामान्य रूप से एक प्राथमिक शिक्षक को प्राथमिक शिक्षा में स्नातक उपाधि की आवश्यकता होती है। प्राथमिक शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए निरंतर किए गए प्रयासों में सर्व शिक्षा अभियान (SSA), शिक्षा गारंटी योजना तथा वैकल्पिक एवं अनूठी शिक्षा, मध्याह्न भोजन योजना (Mid-day Meal), निगरानी पद्धति, ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), महिला समाख्या योजना, अध्यापक शिक्षा योजना, राष्ट्रीय बाल भवन, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE), शिक्षा का अधिकार (RTE) कानून, प्राथमिक शिक्षा कोष, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (NLM), प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय आदि प्रमुख हैं।

ASER, 2014 (Annual Status of Education Report, 2014) द्वारा जनवरी, 2015 में 15206 सरकारी विद्यालयों के प्राथमिक खंडों के सर्वेक्षण पर पाया गया कि 2010 में छात्र-शिक्षक अनुपात 2014 से कम था, जबकि कक्षा-कक्ष और शिक्षक अनुपात 2010 में 2014 के बजाय अधिक था अर्थात् 2010 से

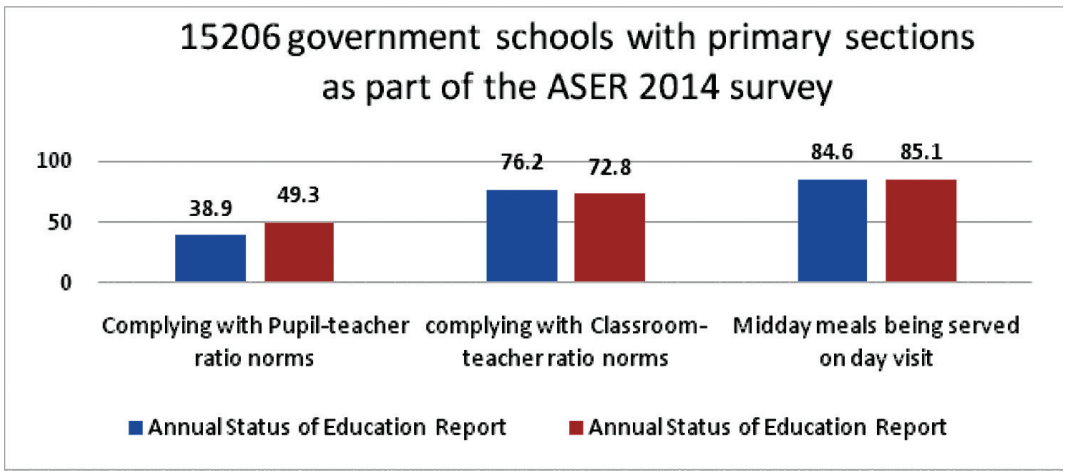

स्रोत— asercentre.org/pratham.orgnnual Status

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 12 5/26/2017 9:26:52 AM

लेकर 2014 तक छात्रों का नामांकन बढ़ने के बाद इन चार वर्षों में शिक्षकों की संख्या में जितनी आनुपातिक वृद्धि होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई और न ही विद्यालयों में ढांचागत परिवर्तन किए गए। इसके विपरीत 2010 तक जो ढांचागत सुविधाएँ विद्यालयों को दी गईं वो विद्यार्थियों के नामांकन कम होने के कारण उपयोग में नहीं आईं।

प्राथमिक प्रशिक्षक के लिए अत्यावश्यक प्रशिक्षण

1. **स्व-अनुशासन का प्रशिक्षण** — एक प्रशिक्षक, प्रशिक्षण के द्वारा नित्य-प्रतिदिन की कार्यप्रणाली में प्रत्येक कार्य समय एवं अवसर को ध्यान में रखकर करता है। यह नियमित व्यवस्था उसकी जैविक घड़ी को जागृत कर स्व-अनुशासन में सहायता करती है, जो प्रशिक्षकों एवं विद्यार्थियों को स्व-प्रेरणा हेतु अभिप्रेरित करती है।
2. **हस्त कौशलों के विकास के लिए प्रशिक्षण**— प्राथमिक प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षण के दौरान स्वयं करके सीखने का प्रशिक्षण लेता है। शिक्षण के लिए पाठ्य सहायक सामग्री वह स्वयं निर्मित करता है और यही अनुभव उसके हस्त कौशलों का विकास करता है। इस प्रकार से प्रशिक्षित शिक्षक 'करके सीखने' की पद्धति को बढ़ावा देता है एवं अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित करता है।
3. **बाल-केंद्रित शिक्षा के लिए प्रशिक्षण**— वर्तमान में शिक्षा बाल-केंद्रित है, लेकिन एक प्राथमिक शिक्षक को यह समझना ज़रूरी है कि वास्तव में बाल-केंद्रित शिक्षा का अर्थ क्या है? बालकों के स्वरों, अनुभवों और सक्रिय सहभागिता को सम्मिलित करते हुए शिक्षा प्रदान करना 'बाल-केंद्रित शिक्षा' कहलाता है। अत: शिक्षा को बाल-केंद्रित कैसे किया जाए, इस बात पर बल देना आवश्यक है।
4. **स्वभाव नियंत्रण हेतु प्रशिक्षण**— प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु बाल मनोविज्ञान विषय का अध्ययन कर बालक के वृद्धि-विकास, सीखने की गति, सीखने के अवरोध, व्यक्तिगत विभिन्नताओं (Individual difference) आदि के बारे में जानकारी लेता है और यह जान पाता है कि एक बालक को सिखाने के लिए अपने आवेगों पर नियंत्रण कितना आवश्यक है।
5. **आवश्यकताओं के ज्ञान का प्रशिक्षण**— प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विषयों का अध्ययन कर एवं शिक्षण अभ्यास के द्वारा प्रशिक्षु स्वयं के अनुभवों से बालक, शिक्षा और समाज की आवश्यकताओं की अनुभूति करता है। वह एक बुनकर के रूप में बालक का सुई की तरह उपयोग कर समाज के हाशिए पर शिक्षा के धागे से संस्कृति का ताना-बाना बुनता है।
6. **समायोजन का प्रशिक्षण**— एक प्रशिक्षु अपने प्रशिक्षण में व्यक्ति, वस्तुओं और परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करना सीखता है और यही सामंजस्य उसके आंतरिक संतुलन में सहायता करता है। एक संतुलित शिक्षक शांत चित्त

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 13 5/26/2017 9:26:52 AM

से विचारों का आदान-प्रदान कर ज्ञान और आविष्कारों का सृजन करने में बालक की सहायता करता है।

7. **शांति के लिए शिक्षा का प्रशिक्षण**— कहावत है कि नींव की ईंट जितनी मज़बूत होगी, कंगूरे उतने ही स्थायी होंगे। यदि एक शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला को मज़बूती से रखता है, तभी वह संस्कृति को पोषण प्रदान करता है। इसके लिए प्राथमिक शिक्षक को शिक्षा जानने के लिए, शिक्षित करने के लिए एवं शिक्षा के साथ-साथ जीने के लिए, के संप्रत्यय को समझना होगा। एक आदर्श रूप में शिक्षक बालक के मन में विद्यमान रहता है। इसलिए शिक्षक वह बागवान है जो अज्ञानता की खरपतवार को नष्ट कर ज्ञान और संस्कृति का बीज बोता है।

8. **पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का प्रशिक्षण**— एक शिक्षक के प्रशिक्षण में अध्यापन के गुणों के प्रशिक्षण के साथ-साथ खेल-कूद, गायन, वादन, अभिनय का प्रशिक्षण भी होना चाहिए ताकि वह बालक के सभी आयामों का विकास करने में मदद कर सके। खेल के मैदान और अभिनय के रंगमंच का उतना ही महत्व है, जितना कि कक्षा-कक्ष का।

9. **अनुभवों के अनुप्रयोगों का प्रशिक्षण**— एक शिक्षक भी अपने शैशवावस्था से लेकर मृत्युपर्यंत समय और परिस्थितियों से अनुभव ग्रहण करता है। कभी-कभी अनुभव, नियम को असत्य साबित कर देते हैं। यदि शिक्षक को अपने अनुभवों का सही प्रयोग करने का प्रशिक्षण दिया जाए तो वह समाज और राष्ट्र के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करेगा।

10. **बहुसंचार माध्यमों का प्रशिक्षण** — आज के आधुनिक युग में इन्फ़ोर्मेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (Information Communication Technology) शिक्षण और प्रशिक्षण का व्यापक और सर्वसुलभ साधन है। नवाचारों की यह तकनीकी एक शिक्षक के लिए अध्ययन, अध्यापन एवं मूल्यांकन करने में उपयोगी है। एक शिक्षक को मोबाइल और कंप्यूटर जैसे तकनीकी उपकरणों को तो समझना ही होगा। संचार के आधुनिक माध्यमों को समझे बिना अध्यापक प्रशिक्षण का कार्य अधूरा ही रहेगा।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा हेतु एन.सी.एफ़.टी.ई. की सिफ़ारिशें

शिक्षक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार प्राथमिक शिक्षक शिक्षा में चिंतनशील शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए की गई सिफ़ारिशें निम्न हैं –

1. **प्राथमिक शिक्षक शिक्षा को सुधारने की आवश्यकता**— प्राथमिक शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षक का व्यावसायिक रूप से विकास करने की आवश्यकता है, इसके लिए अभ्यास और कौशलों में गुणात्मक और परिमाणात्मक वृद्धि करनी होगी। उदाहरण के लिए, मास्टर ऑफ़ एजुकेशन (एम.एड.) कार्यक्रम सेकेंडरी शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 14 5/26/2017 9:26:52 AM

को देखते हुए बनाया गया है। प्राथमिक शिक्षक शिक्षा के लिए इसमें कोई स्थान नहीं है।

2. **प्रवेश योग्यता एवं प्रशिक्षण अवधि को बढ़ाना**— एक प्रवीण प्राथमिक शिक्षक के लिए प्रशिक्षण में प्रवेश हेतु योग्यता एकात्मक (Unitary) करनी होगी ताकि गुणवत्ता से समझौता न हो और प्रशिक्षण अवधि को भी बढ़ाया जाना चाहिए ताकि विभिन्न कौशलों में दक्षता हासिल हो सके। चार वर्षीय समन्वित उपाधि कार्यक्रम श्रेष्ठ उदाहरण है। जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय का प्राथमिक शिक्षा में स्नातक (Bachelor of Elementary Education) कार्यक्रम।

3. **बालक की मनो-सामाजिक आवश्यकताओं को समझने एवं उसके अधिगम को आसान बनाने के लिए शिक्षाशास्त्र का आवश्यक ज्ञान**— एक प्राथमिक शिक्षक को बालक के वृद्धि-विकास, प्रकृति, क्षमताएँ, रुचि, मनोवृत्ति आदि को जानने और अधिगम कराने के लिए शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यावश्यक है।

4. **सहयोगी पाठ्यचर्या योजना में पाठ्यचर्या प्रतिरूप निर्माण संगठन और सभी हितधारी वर्ग को शामिल करना** — प्राथमिक शिक्षक शिक्षा को क्रमोन्नत करने के लिए पाठ्यचर्या में बदलते परिप्रेक्ष्य के अनुसार परिवर्तन किए जाने चाहिए। इसके लिए हितधारी वर्ग को सम्मिलित करते हुए उन सभी संगठनों के प्रस्ताव भी आमंत्रित किए जाएँ जो कि शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान दे रहे हैं और दे सकते हैं।

5. **प्राथमिक शिक्षा में विशेष रूप से योग्य शिक्षक-प्रशिक्षकों की आवश्यकता को समझना**— सामान्य शिक्षा में समावेशित शिक्षा के समावेश के लिए प्रथम आवश्यकता है कि सामान्य विद्यालयों में विशेष शिक्षकों की ज़रूरत महसूस करना और दूसरा पूर्व में नियुक्त सामान्य शिक्षकों के लिए आवश्यक आधारभूत प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

सारांश

प्राचीन मिथक "शिक्षक जन्म लेते हैं बनाए नहीं जाते" को त्यागकर आज नया अध्याय "शिक्षक तैयार किए जाते हैं, जन्म नहीं लेते" को अपनाने की आवश्यकता है। एक अध्यापक को केवल ज्ञान होना ही नहीं, अपितु ज्ञान के विस्तार के लिए विभिन्न कौशलों में भी पारंगत होना होगा। एन.सी.एफ़.टी.ई. का मूल भाव है कि ज्ञान देने के लिए है, न कि ज्ञान लेने के लिए अर्थात् प्राथमिक शिक्षक को विद्यार्थी के समीप जाने की प्रवृत्ति अपनानी होगी। प्राथमिक शिक्षक को अधिक भाषा प्रवीणता (Proficiency) लाने के प्रयास करने होंगे चाहे वह भाषा का शिक्षक है या नहीं।

"इस समय शिक्षा की औपचारिक पद्धति और देश की समृद्धि तथा विविध सांस्कृतिक परंपराओं के बीच एक खाई है, जिसे पाटना आवश्यक है। आधुनिक टेक्नालॉजी की धुन में यह नहीं होना चाहिए कि नई पीढ़ी भारतीय इतिहास और संस्कृति के मूल से ही कट जाए।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986)

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 15 5/26/2017 9:26:52 AM

एक अबोध बालक की तरह प्राथमिक शिक्षक को पक्षपात रहित एवं कोमल हृदय होने की आवश्यकता है। एक प्राथमिक शिक्षक को चुंबक (आकर्षण बल से अपनी तरफ़ खींचता है) के बजाय इत्र (सुगंध से स्वयं आकर्षित होकर खींचे चले जाते हैं) की तरह होने का प्रयास करना चाहिए। समाज और राष्ट्र की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों को इस योग्य बनाया जाए कि वे शिक्षार्थियों के बीच रहकर उनकी देखभाल भी कर सकें। व्यक्तिगत अनुभवों से सीखने व सिखाने को प्रेरित करें। उनमें चिंतनशील होने की प्रवृत्ति को जाग्रत करें। ज्ञान को केवल पुस्तक की सीमाओं में रहकर ही न देखें। कार्य चाहे सामाजिक हो, प्रशासनिक अथवा व्यावसायिक, उसे व्यावहारिकता के साथ करने का गुण विकसित करने हेतु प्रेरित करें।

संदर्भ

एपल, माइकल डब्ल्यू और बीन, जेम्स ए. 2011. 'कक्षा से सीखें सबक.' *लोकतांत्रिक विद्यालय*. एकलव्य, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

एन.सी.ई.आर.टी. 1988. *नेशनल करिकुलम फ़ॉर एलिमेन्ट्री एंड सेकंडरी एजुकेशन*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली, इंडिया.

एन.सी.टी.ई. 2009. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन: टुवार्ड्स प्रिपेरिंग प्रोफ़ेशनल एंड ह्यूमेन टीचर*. नेशनल काउंसिल फ़ॉर टीचर एजुकेशन. नयी दिल्ली.

एस.जे., एस. जे. 2013. 'एन एनालिटिकल एंड कंपेरिटिव स्टडी ऑफ़ आई.सी.एस.ई., सी.बी.एस.ई. एंड झारखंड.' *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन रिसर्च एक्सपेरिमेंटेशन एंड इन्नोवेशन*. 3(5), पृ. 1-16.

एल., सी. 1992. *हैंडबुक ऑफ़ रिसर्च ऑन करिकुलम*. (वॉल्यूम. पी.जैक्सन). मैकमिलन. न्यूयॉर्क.

कौर, एस. 2013. दिसंबर. 'प्रेज़ेंट सीनेरियो ऑफ़ टीचर एजुकेशन इन इंडिया.' *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सांइस रिसर्च (आई. जे.एस.आर.)*. 2(12), 262-264.

गोयल, डी. सी. गोयल और आर. माधवी. 2010. *एब्स्ट्रेक्ट ऑफ़ रिसर्च स्टडीज़ कंडक्टेड बाय टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस इन इंडिया*. द एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा, वड़ोदरा.

ग्रीनबर्ग, ड. 2013. *अब हम आज़ाद हैं— सडबरी वैली स्कूल,* प्रथम मुद्रण. प. य. कुशवाहा, (अनुवादक). एकलव्य. भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

चंद्रशेखर, के. 2001. *'प्राइमरी स्कूल टीचर एजुकेशन प्रोग्राम—एन इवैल्यूएटिंग स्टडी ऑफ़ डी.आई.ई.टी.'* डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.

डैश, एम. 2000. *एजुकेशन इन इंडिया—प्रोब्लम्स एंड पर्सपेक्टिव्स*. एथलैंटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नयी दिल्ली.

परमेश्वरम, ओ.पी. 2010. 'डेवलपमेंट ऑफ़ आर्ट एजुकेशन करिकुलम एट द सेकंडरी स्कूल लेवल.' इन डी. गोयल, एंड आर. माधवी. *अबस्ट्रेक्ट ऑफ रिसर्च स्टडीज़ कडंक्टेड बाय टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन इन इंडिया*. द एम. एस यूनिवर्सिटी ऑफ़ बडौदा, वडोदरा. वॉल्यूम III, पृष्ठ 316-318.

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 16 5/26/2017 9:26:53 AM

बालसरा, एम. 2002. *एडमिनिस्ट्रेशन एंड रीऑर्गेनाज़ेशन ऑफ़ टीचर एजुकेशन.* कनिश्का पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. नयी दिल्ली.

भट्टाचारजी, जे. 2015, जुलाई. 'प्रोग्रेस ऑफ टीचर एजुकेशन इन इंडिया— ए डिस्कशन फ्रॉम पास्ट टू प्रेज़ेन्ट.' *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमनिटीज़ एंड सोशल साइंस स्टडीज़.* II(I). 213-222.

यशपाल कमीटी रिपोर्ट. 1993. एम.एच.आर.डी. गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया. नयी दिल्ली.

होल्ट, जे. 1993. *बच्चे असफ़ल कैसे होते हैं,* दूसरा पुनर्मुद्रण. प. य. कुशवाहा, (अनुवादक). एकलव्य, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

___. 2010. *असफ़ल स्कूल,* पहला पुनर्मुद्रण. अ. गुप्ता, (अनुवादक). एकलव्य, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

___. 2011. *शिक्षा की बजाय — चीज़ों को बेहतर ढंग से करने के तरीके,* दूसरा पुनर्मुद्रण. स. जोशी. (अनुवादक). एकलव्य, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

___. 2014. *बचपन से पलायन — बच्चों की आवश्यकताएँ व अधिकार,* दूसरा पुनर्मुद्रण. प. य. कुशवाहा, (अनुवादक). एकलव्य, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत.

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 17 5/26/2017 9:26:53 AM